7 राज्य • 1 केंद्रशासित प्रदेश • 19 संस्करण : उत्तर प्रदेश | उत्तराखंड | हिमाचल | जम्मू-कश्मीर | दिल्ली | हरियाणा | पंजाब | चंडीगढ़

राजधानी
वर्ष 9 | अंक 294 | पृष्ठ : 20+8 = 28
मूल्य : तीन रुपये

अमर उजाला

लखनऊ
सोमवार, 24 अप्रैल 2017
amarujala.com

'जल, वन और धरती से ही जीवन'

लखनऊ। जल, वन और धरती पर हो रहे अत्याचारों को रोकने के लिए आवश्यक है कि हम चर्चाएं होनी चाहिए तभी जाकर हम जीवन को बचा सकते हैं। यह बातें रविवार को इंस्टीट्यूशन ऑफ इंजीनियर्स में 'जल, वन, धरतीः चुनौतियां' विषयक संगोष्ठी में वक्ताओं ने कही। इंजीनियर वीबी सिंह ने कहा कि वर्तमान समय में आज की ज्वलंत समस्याओं पर जन सामान्य तक जाकर वस्तुस्थिति को बताया जाए। पूर्व मुख्य वन संरक्षक मो. अहसन वन की परिभाषा कारक, यूपी में वन के प्रकार, वनों से प्रत्यक्ष एवं अप्रत्यक्ष लाभ पर अपने विचार व्यक्त किए। इंस्टीट्यूशन ऑफ इंजीनियर के अध्यक्ष इंजीनियर भरत राज सिंह ने कहा कि हमें वास्तविक रूप से घटते जल स्रोत, खराब होती धरती और काटे गए वनों को फिर से उचित स्तर तक स्थापित करना होगा। सेमिनार संयोजक प्रो. जमाल नुसरत ने कहा कि जल वन और धरती के प्रति अनाचार को रोकने के लिए आवश्यक नीतियों का पालन निश्चित किया जाए। संगोष्ठी के तीन सत्रों में जल एवं धरती विशेषज्ञ इं. रवीन्द्र कुमार, जल विशेषज्ञ इं. रमाकांत आर्या व विश्वनाथ खेमका ने अपने विचार व्यक्त किए।